सृजनात्मकता

डॉ० शिखा जैन

मैं इस लेख में आपको रचनात्मक कार्यो की महत्ता के बारे में बताने जा रही हूँ । अधिकतर अभिभावक इसे बच्चों के विकास में ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं । परन्तु वास्तव में बच्चों को अपने बाल्यकाल में तथा आगे के जीवन में अनेक शारीरिक व सामाजिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है । जिससे मनोवैज्ञानिक समस्यायें - चिन्ता, निराशा, इत्यादि उत्पन्न होती हैं । उस समय सृजनात्मक कार्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

सबसे पहले मैं बता दूँ कि सृजनात्मकता (Creativity) है क्या ? यह मानव की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह कोई नवीन रचना अथवा नवीन विचार प्रस्तुत करता हैं । यह समस्त प्राणियों में पायी जाती है - किसी में कम किसी में ज्यादा ।

प्रायः यह धारणा है कि केवल लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार, वैज्ञानिक या फिल्म अभिनेता आदि ही सृजनशील व्यक्ति होते हैं । परन्तु यह विचार माननीय नहीं है क्योंकि सृजनात्मकता किसी भी क्षेत्र में अपना अच्छा प्रभाव दिखा सकती है । उदाहरण के लिये क्लर्क, श्रमिक, रसोईया, कृषक आदि अपने - अपने क्षेत्र में सृजनशील हो सकते हैं । यदि एक माता अपने बच्चों का लालन-पालन सही दिशा में करे और उसे स्वस्थ व्यक्तित्व विकसित करने में अपना सहयोग दे तो वह भी सृजनात्मक कार्य हैं । सारांश यह है कि समस्त व्यवसायों अथवा क्षेत्रों में सृजनशीलता होती है । यह अभिभावक का कार्य है कि अपने बच्चे की सृजनात्मकता को पहचान कर उसे समुचित दिशा में विकसित करें।

तकनीकी विकास और औद्योगिकरण की बढ़ती दर के कारण आज प्रत्येक व्यक्ति को अनेक जटिलताओं का सामना करना पड़ता है । बाल्यकाल से बच्चों में स्पर्धा की भावना भर दी जाती है । प्रारम्भ में बच्चों को पढ़ाई का दबाव रहता है । पढ़ाई के बाद जब वह अपने व्यवसायिक क्षेत्र में कदम रखता है तो वहाँ उसे तनाव, चिन्ता जैसी अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है । ऐसी परिस्थिति में बच्चों का अपने बाल्यकाल में तथा आगे चलकर उनके जीवन में उचित सन्तुलन बना रहे इसके लिए सृजनात्मकता का बहुत योगदान है क्योंकि सृजनात्मकता के द्वारा बच्चे शान्ति का अनुभव करते हैं । जब व्यक्ति या बच्चा अपनी रूचि के अनुसार रचनात्मक कार्य करता है तो वह उसमें बिल्कुल तल्लीन हो जाता है । यही तल्लीनता उसे तनावमुक्त करती है एवं उसे पूर्ण रूप से शान्त करती है । कई बार बच्चे अपनी निराशा भी सृजनात्मकता में निकालते हैं । उदाहरण के लिये चित्रकारी या संगीत के माध्यम से ।

सृजनात्मकता के द्वारा बच्चों के विचारों में विविधता और कल्पना की प्रक्रिया विकसित होती है । अतः जब भी कोई समस्या उत्पन्न होती है तो वह निराश होने की जगह अपनी कल्पना शक्ति का सहारा लेता है तथा अलग-अलग प्रकार से सकारात्मक सोच-विचार करता है जो उसे उस समस्या का समाधान ढूँढने में मदद करती है ।

अनेक अध्ययन बताते है कि सृजनात्मकता सबसे पहले बच्चों के खेल में प्रकट होती है। धीरे-धीरे यह जीवन के दूसरे क्षेत्रों में प्रकट होती है। 30 वर्ष की उम्र तक आते -आते यह शिखर पर पहुँच जाती है। यही कारण है कि बच्चों का ध्यान शुरू से ही सृजनात्मकता की तरफ लगाना चाहिए तथा उसे विकसित करने में अभिभावक का पूरा सहयोग होना चाहिये।

अन्त में, मैं यही कहना चाहूँगी कि इस प्रतिस्पर्धा की दुनिया में आज सृजनात्मकता का महत्व बढ़ गया है, क्योंकि इसके द्वारा बच्चे में स्व-अभिव्यक्ति, स्वसुदृढ़ता तथा स्वमूल्यांकन का विकास होता है जो कि बच्चे के लिये आगे चलकर महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। अतः प्रत्येक अभिभावक का कर्तव्य है कि पढ़ाई के अलावा अपने बच्चों में रूचि के अनुसार सृजनात्मकता का विकास करें जिससे जीवन में जब कभी भी निराशा , कुंठा या दबाव का सामना करना पड़े तो वह रचनात्मक कार्यो में संलग्न होकर उचित समायोजन कर सकें तथा कुसमायोजन से बचें।

***